E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(1): 42-43
Received: 26-11-2022
Accepted: 31-12-2022

Dr. Gauri Bhatnagar
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Shri Durga, Mahila Mahavidyalaya, Tohana, Fatehabad, Haryana, India

Corresponding Author:
Dr. Gauri Bhatnagar
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Shri Durga, Mahila Mahavidyalaya, Tohana, Fatehabad, Haryana, India

रामायण काल में याज्ञिक अनुष्ठान

Dr. Gauri Bhatnagar

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i1a.920

प्रस्तावना

किसी साहित्यिक कृति के स्थायित्व एवं शाश्वत महत्त्व की कसौटी यह है कि वह लोगों के जीवन को कहाँ तक प्रभावित करती है। इस दृष्टि से यह निर्विवाद सत्य है कि बाल्मीकि रामायण की संस्कृति का आज भी भारतीय जनता के जीवन पर एवं सजीव - प्रभाव है। समाज के उच्च से लेकर निम्नतम वर्गों पर पड़ने वाले उसके व्यापक, अनवरत एवं गहरे प्रभाव की तुलना किसी अन्य साहित्यिक अथवा धार्मिक कृति से नहीं की जा सकती । रामायण हमारी भावनाओं तथा आचार-व्यवहार में आत्मसात् हो चुकी है।

याज्ञिक अनुष्ठान

रामायण काल यज्ञ-प्रधान युग था । श्रेष्ठ यज्ञों के अनुष्ठान से ही राजा यश तथा गौरव प्राप्त करते थे। यज्ञों का सञ्चालन होता, उद्गाता, अध्वर्यु तथा ब्रह्मा- इन चार ऋत्विजों के द्वारा होता था। इनमें होता ऋचाओं का पाठ करता, उद्गाता सोमयाग के समय आहुति के साथ-साथ मन्त्रों का गान करता, अध्वर्यु यज्ञ में प्रयुक्त मन्त्रों का जाप करता तथा ब्रह्मा समस्त कर्मकाण्ड का निरीक्षण तथा यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करता था। यज्ञ के अनुष्ठान- समय में व्यवस्था तथा अनुशासन बनाये रखने के लिये विशेष विधि-विधान थे। यज्ञ में दीक्षित हो जाने पर यजमान को मन तथा इन्द्रियों पर संयम रखकर दीक्षा के सभी नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करना होता था। दीक्षा की अवधि में किसी पर क्रोध करना पुण्य का नाशक होता था । [1] साथ ही यज्ञ की प्रयोग विधि सभी सम्बद्ध जनों के कल्याण हेतु होती थी। [2] यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये आरम्भ में शान्तिकारक क्रियायें की जाती थीं ।

गृहस्थ के लिये यज्ञ - दीक्षा में पत्नी का होना अनिवार्य था। यज्ञ के लिये किसी नदी का तट, वन प्रदेश, आश्रम अथवा पवित्र पर्वत की समीपता उपयुक्त मानी जाती थी। यज्ञ की सामग्री को भी देवत्व की श्रेणी प्राप्त थी। [3]

हवि, धृत, पुरोडाश, कुश तथा यूप का एक यज्ञ में प्रयोग होने पर दूसरे में प्रयोग निषिद्ध था। [4] साथ ही ऋत्विजों को पहले से नियत की गई दक्षिणा न देना निन्दित कृत्य था । [5] यज्ञों में पशु-बलि दिये जाने के प्रमाण भी प्राप्त होते हैं। यथा अश्वमेध यज्ञ की समस्त क्रियायें यज्ञीय अश्व की बलि पर ही आधारित थीं ।

रामायण काल के प्रमुख यज्ञ इस प्रकार हैं

यज्ञों में अश्वमेध यज्ञ की अत्यधिक प्रतिष्ठा थी, जिसका आयोजन सार्वभौम सम्राट बनने के इच्छुक राजा के द्वारा किया जाता था। [6]

इस यज्ञ का कर्त्ता समस्त दिशाओं में विजय प्राप्त करता था। [7] यद्यपि इसका सवन समय तीन दिन का है, [8] तथापि इसके आयोजन में एक वर्ष का समय लग जाता है। ऐसी मान्यता है कि अश्वमेध यज्ञ करने से समस्त पापों की निवृत्ति हो जाती है। [9] यह फाल्गुन शुक्ल अष्टमी अथवा नवमी को आरम्भ होता है। [10] इसे सोलह ऋत्विज करते हैं [11]

रामायण में अयोध्या के ब्राह्मणों द्वारा वाजपेय यज्ञ से छत्र प्राप्ति का उल्लेख है । [12] सोमयागों में प्रमुख यह यज्ञ शरद ऋतु में ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों द्वारा ही किया जाता है। [13] राम ने दश सहस्र वर्षों तक कई अश्वमेध यज्ञ तथा इससे दश गुने वाजपेय यज्ञ किये थे। [14]

राजसूय यज्ञ एक मिश्रित धार्मिक आयोजन है। रामायण में दशरथ के द्वारा यह यज्ञ करने का संकेत प्राप्त होता है। [15] इस यज्ञ में अनेक सोम-यज्ञ सम्मिलित है। यथा- पवित्र, दशपेय, अभिषेचनीय, केशवपनीय, व्युष्टिद्विरात्र तथा क्षत्रधृति । यह यज्ञ राजा के विश्वव्यापी शासन का प्रतीक था। साथ ही यह धर्म से प्राप्त पुण्य का वर्धक तथा पापनाशक है। [16]

दशरथ के द्वारा अग्निष्टोम यज्ञ करने का भी संकेत मिलता है। [17] यह यज्ञ सोमयज्ञों में सरल तथा सामान्य है। इसमें प्रातः माध्यन्दिन तथा सायं तीन सवन होते हैं। इन तीनों सवनों में सोमाभिषेक, गृह-ग्रहण तथा उसके होमादि का अनुष्ठान होता है। इसमें अग्नि तथा सोम के लिये पशुयज्ञ किया जाता है। [18] इसका आयोजन बसन्त ऋतु में होता है। [19]

रामायण में सन्ध्यावन्दन, गायत्री जप के पश्चात् अग्निहोत्र के अनुष्ठान का विधान है। [20] साथ ही सामान्य गृहस्थों तथा ऋषियों के अग्निहोत्र करने का उल्लेख मिलता है। [21]

वशिष्ठ द्वारा दर्शपौर्णमास यज्ञों को किये जाने का भी संकेत मिलता है। [22] क्रमशः अमावस्या तथा पूर्णिमा के दिन अनुष्ठान होने के कारण इनका नाम दर्शपौर्णमास पड़ा। पूर्णिमा को अग्नि के लिये अष्टादशकपालपुरोडाशयाग, अग्नि तथा सोम के लिये आज्यद्रव्यकउपांशुयाग तथा अग्नि एवं सोम के लिये एकादशकपालपुरोडाशयाग- ये तीन याग होते हैं। पूर्णिमा के याग में दो दिन तथा दर्श के लिये एक दिन लगता है।

रामायण में अनेक यज्ञ सम्बन्धी उपमायें प्रयुक्त हुई हैं, जिनसे यज्ञीय विषयों की व्यापक्तता एवं लोकप्रियता प्रकट होती है।

संदर्भ

1. तथाभूता हि सा चर्या न शापस्तत्र मुच्यते । रामायण , बालकाण्ड 19/8
2. यज्ञच्छिद्रं भवत्येतत्सर्वेषामशिवाय नः । वही, बालकाण्ड 39 / 10
3. समित्कुशपवित्राणि वेहाश्चायतनानि च। .....त्वां रक्षन्तु नरोत्तम ।। वही अयोध्याकाण्ड 25 / 7
4. हविराज्य पुरोडाशः कुशा यूपाश्च खादिराः। नैतानि यातयामानि कुर्वन्ति पुनरध्वरे ।। वही, अयोध्याकाण्ड 61/17
5. संश्रुत्य च तपस्विन्यः सत्रे वै यज्ञदाक्षिणाम् । तां चापलतां पापं यस्यायोर्नुमते गतः ।। वही, अयोध्याकाण्ड 75/26
6. क - वही, सुन्दरकाण्ड 91 / 3, बालकाण्ड 13/4 ख- राज्ञोश्वमेधः सर्वकामस्य । कात्यायन श्रौत सूत्र 20/1/1
7. तस्माद् अश्वमेधयाजी सर्वा दिशो जयति । शतपथ ब्राह्मण 13 / 2/2/1
8. ऋोऽश्वमेधः संख्यातः कल्पसूत्रेण ब्राह्मणैः । बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 13 / 33
9. क - अश्वमेधो महायज्ञः पावनः सर्वपाप्मनाम्। वही, उत्तरकाण्ड 75/2 ख - सर्वे वै एतेन पाप्मानं देवाः अतरन् । तैत्तिरीय संहिता 5/3/2
10. अष्टम्यां नवम्यां वा फाल्गुनी शुक्लस्य । कात्यायन श्रौत सूत्र 20/1/2
11. षोडश ऋत्विजः । बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 13 / 31
12. क- वाजपेय समुत्थानि छत्राण्येतानि पश्यनः । वही, अयोध्याकाण्ड 40/ 20 ख- एभिश्छायां करिष्यामः स्वैश्छत्रैर्वाजपेयकैः । वही अयोध्याकाण्ड 41 /21
13. शतपथ ब्राह्मण 5/1/5/ 2-3
14. दशवर्षसहस्राणि वाजिमेधानथाकरोत्। वाजपेयान्दशगुणास्वथा बहुसुवर्णकान् ।। वही उत्तरकाण्ड 99/9
15. राजसूयाश्वमेधैश्च वह्निर्येनामितर्पितः ।। वही किष्किन्धाकाण्ड 5 / 5
16. तैत्तिरीय संहिता 1/8/15
17. बाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकाण्ड 4/8
18. कात्यायन श्रौतसूत्र 7 / 1-10/9 8-
19. बसन्तेग्निष्टोमः । वही 7/1/5
20. ततः स्नात्वा यथान्यायं संतर्प्य पितृदेवताः । हुत्वा चैताग्निहोत्राणि प्राश्य चामृतवद्हविः ।। बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 34 / 2
21. वही, बालकाण्ड 39 / 9, अयोध्याकाण्ड 36 / 9 48 / 11, 69/13, 86/ 2 111 / 5, अरण्यकाण्ड 4 / 21. उत्तरकाण्ड 9/14
22. दर्शश्च पूर्णमासश्च यज्ञाश्चैवाप्तदक्षिणाः । वही, बालकाण्ड 52 / 23